2. फिशर का नकदी लेन-देन सिद्धान्त
(FISHER'S CASH TRANSACTIONS THEORY)

मुद्रा का परिमाण-सिद्धान्त बताता है कि मुद्रा का परिमाण ही कीमत-स्तर अथवा मुद्रा के मूल्य का मुख्य निर्धारक है। यदि मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन होगा तो वह ठीक उसी अनुपात में कीमत स्तर में परिवर्तन ला देगा। *फिशर* के शब्दों में, "यदि अन्य चीजें अपरिवर्तित रहें तो, ज्यों-ज्यों मुद्रा चलन की मात्रा बढ़ती है, त्यों-त्यों कीमत-स्तर भी प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ता है और मुद्रा का मूल्य घटता जाता है और विलोमश: भी।"[1] (Other things remaining unchanged, as the quantity of money in circulation increases, the price level also increases in direct

1. Irving Fisher, *The Purchasing Power of Money*, Revised Ed., 1926.

Scanned with CamScanner

proportion and the value of money decreases and vice versa). यदि मुद्रा की मात्रा दुगुनी कर दी जाए तो कीमत स्तर भी दुगुना हो जाएगा और मुद्रा का मूल्य आधा रह जाएगा। दूसरी ओर, मुद्रा की मात्रा घटाकर आधी कर दी जाए, तो कीमत स्तर भी गिर कर आधा रह जाएगा और मुद्रा का मूल्य दुगुना हो जाएगा।

फिशर ने "विनिमय के समीकरण" की शब्दावली में अपना सिद्धान्त इस तरह स्पष्ट किया है:

$$T = MV + M'V'$$

जहां P = कीमत स्तर अथवा $1/P$ = मुद्रा का मूल्य

M = वैध मुद्रा की कुल मात्रा

V = मुद्रा का चलन वेग *(Velocity of Circulation)*

M' = साख मुद्रा की कुल मात्रा

V' = M' का चलन वेग

T = मुद्रा के विनिमय में प्राप्त वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल राशि अथवा मुद्रा द्वारा किया गया लेन-देन।

यह समीकरण मुद्रा की मांग (PT) को मुद्रा की पूर्ति के बराबर करता है। लेन देनों का कुल परिमाण गुणा कीमत स्तर अर्थात PT मुद्रा की कुल मांग को व्यक्त करता है। फिशर के अनुसार $PT = \Sigma PQ$ दूसरे शब्दों में, समाज (Σ) द्वारा खरीदी गई कुल मात्रा (Q) को कीमत स्तर (P) से गुणा करने पर मुद्रा की कुल मांग प्राप्त होती है। यह समाज में मुद्रा की कुल पूर्ति के बराबर होती है जो (पूर्ति) वास्तविक मुद्रा की मात्रा M और उसके चलन वेग (V), जमा साख मुद्रा की कुल मात्रा (M) और उसके चलन वेग (V') के बराबर होती है। इस प्रकार एक वर्ष में क्रयों के कुल मूल्य (PT) को $MV+M'V'$ से आंका जाता है। इस प्रकार विनिमय का समीकरण है: $PT=MV+M'V'$। कीमत स्तर पर मुद्रा की मात्रा का प्रभाव अथवा मुद्रा का मूल्य निकालने के लिए हम उक्त समीकरण को इस प्रकार लिख सकते हैं—

$$P = \frac{MV + M'V'}{T}$$

फिशर ने लक्ष्य किया है कि कीमत स्तर (P), मुद्रा की मात्रा ($M+M'$) के अनुपात से घटता-बढ़ता है, बशर्ते कि व्यापार का परिमाण (T) तथा चलन वेग (V, V') अपरिवर्तित रहें। प्रस्तुत प्रस्थापना की सत्यता इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि यदि M तथा M' को दुगुना कर दिया जाए जबकि V, V' तथा T स्थिर रहें तो P दुगुना हो जाता है परन्तु मुद्रा का मूल्य ($1/P$) आधा रह जाता है।

फिशर के मुद्रा परिमाण के सिद्धान्त को चित्र 6 (A) तथा (B) की सहायता से स्पष्ट किया जा रहा है। चित्र का भाग A मुद्रा की मात्रा में परिवर्तनों के कीमत-स्तर पर प्रभाव को स्पष्ट करता है। शुरू से देखें, जब मुद्रा की मात्रा M है तो कीमत स्तर P है। जब मुद्रा की मात्रा बढ़ाकर दोगुनी अर्थात M_2 कर दी जाती है, तो कीमत स्तर भी दुगुना अर्थात P_2 हो जाता है। फिर जब मुद्रा की मात्रा बढ़ाकर चार गुना अर्थात M_4 कर दी जाती है, तो कीमत स्तर भी बढ़कर चार गुना अर्थात P_4 हो जाता है। इस सम्बन्ध को मूल बिन्दु से 45 के कोण वक्र $P=f(M)$ द्वारा व्यक्त किया जाता है।

चित्र 6.1 के भाग B में मुद्रा की मात्रा तथा मुद्रा के मूल्य का सम्बन्ध दर्शाया गया है, जहां मुद्रा के मूल्य को अनुलम्ब अक्ष पर लिया गया है। जब मुद्रा की मात्रा M है तो मुद्रा का मूल्य $1/P$ है। जब

Scanned with CamScanner

मुद्रा की मात्रा बढ़ाकर दोगुनी अर्थात M_2 कर दी जाती है तो मुद्रा का मूल्य पहले से आधा अर्थात $1/P_2$ रह जाता है और मुद्रा की मात्रा बढ़ाकर चार गुना अर्थात M_4 हो जाने पर, मुद्रा का मूल्य घटकर चौथाई अर्थात $1/P_4$ हो जाता है। मुद्रा की मात्रा तथा मुद्रा के बीच इस प्रतीप सम्बन्ध को नीचे की ओर ढालू वक्र $1/P=f(M)$ द्वारा दिखाया गया है।

सिद्धान्त की मान्यताएं (Assumptions of the Theory)

फिशर का सिद्धान्त निम्न मान्यताओं पर आधारित है—

1. विनिमय के समीकरण में P एक निष्क्रिय साधन है जो अन्य साधनों से प्रभावित होता है।
2. M से M' का अनुपात स्थिर रहता है।
3. यह मान लिया गया है कि V तथा V' स्थिर हैं और M तथा M' में होने वाले परिवर्तनों से स्वतंत्र रहते हैं।
4. T भी स्थिर है और अन्य साधनों जैसे M, M', V तथा V' से स्वतंत्र रहता है।
5. यह मान लिया गया है कि मुद्रा की मांग लेन-देन के मूल्यों के समानुपाती है।
6. मुद्रा की पूर्ति को बहिर्जात रूप से निर्धारित स्थिरांक मान लिया गया है।
7. यह सिद्धान्त दीर्घकालीन अवधि में ही लागू होता है।
8. यह सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार विद्यमान है।

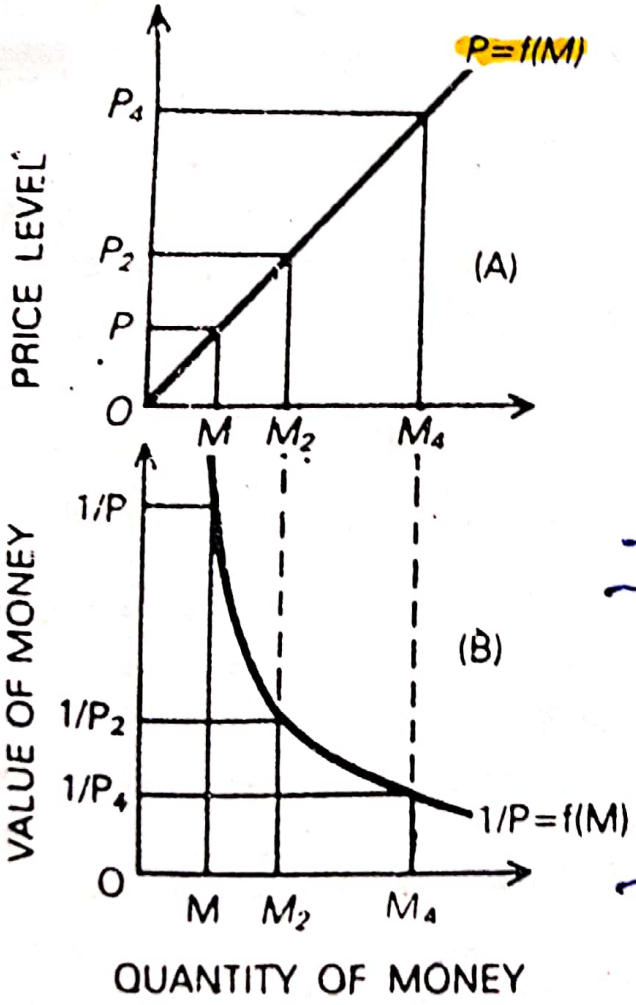

चित्र 6.1

सिद्धान्त की आलोचनाएं (Criticisms of the Theory)

अर्थशास्त्रियों ने फिशर के मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त की कड़ी आलोचनाएं की हैं—

1. *स्वयंसिद्ध (Truism)*—केन्ज के अनुसार, "मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त एक स्वयं-सिद्ध सिद्धांत है।" यह स्वंय-सिद्ध ही है, क्योंकि यह बताता है कि वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए भुगतान की गई मुद्रा की कुल मात्रा (MV+M'V') निश्चय से उनके मूल्य PT के बराबर होती है। परन्तु यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती कि मुद्रा की मात्रा में कुछ प्रतिशत परिवर्तन के परिणामस्वरूप कीमत स्तर में उतने ही प्रतिशत परिवर्तन होग।
2. *अन्य बातें समान नहीं (Other Things not Equal)*—फिशर के समीकरण में मुद्रा की

Scanned with CamScanner

मात्रा तथा कीमत स्तर के बीच प्रत्यक्ष एवं समानुपाती सम्बन्ध इस मान्यता पर आधारित है कि 'अन्य वस्तुएं अपरिवर्तित रहती हैं।'' परन्तु वास्तविक जीवन में V, V' तथा T स्थिर नहीं रहते और फिर ये M, M' और P से भी स्वतंत्र नहीं रहते। बल्कि, फिशर के समीकरण के सभी तत्त्व परस्पर सम्बद्ध तथा परस्पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए M में परिवर्तन होने से P में परिवर्तन हो सकता है। परिणामतः हो सकता है कि मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन की अपेक्षा कीमत स्तर अधिक अनुपात में परिवर्तित हो जाए। इसी प्रकार P में परिवर्तन होने से M में परिवर्तन हो सकता है। संभव है कि कीमत स्तर बढ़ने से अधिक मुद्रा जारी करना जरूरी हो जाए। फिर P में परिवर्तन होने से व्यापार की मात्रा भी प्रभावित होती है। जब कीमतें बढ़ती या घटती हैं तो व्यावसायिक सौदों की मात्रा बढ़ती या घटती है। फिर, इस मान्यता का भी तथ्यों से समर्थन नहीं होता कि M से M' का अनुपात स्थिर रहता है। इतना ही नहीं, अपितु M और M' भी T से स्वतंत्र नहीं हैं। व्यावसायिक सौदों की मात्रा में वृद्धि, मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि की अपेक्षा रखती है।

3. स्थिरांक विभिन्नकाल से सम्बद्ध (Constants Relate to Different Time)—हॉम ने फिशर के M और V को गुणा करने को भी इसीलिए आलोचना की है कि M का सम्बन्ध निश्चित समय (point of time) से है और V का सम्बन्ध समयावधि (period of time) से है। इनमें पहली स्थैतिक धारणा है और दूसरी गत्यात्मक धारणा है। इसलिए दो अतुलनीय घटकों को गुणा करना तकनीकी दृष्टि से असंगत है।[1]

4. मुद्रा का मूल्य मापने में असमर्थ (Fails to Measure Value of Money)—फिशर का समीकरण मुद्रा की क्रय शक्ति को नहीं मापता, अपितु केवल नकद सौदों को अर्थात सभी प्रकार के व्यावसायिक सौदों की मात्रा मापता है। परन्तु मुद्रा की क्रय शक्ति या मूल्य का सम्बन्ध उन सौदों से है जो उपयोग की वस्तुओं तथा सेवाओं के क्रय के लिए हो। इसलिए मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त मुद्रा का मूल्य मापने में असमर्थ है।

5. कीमत स्तर में उतार-चढ़ाव क्यों? (Why Fluctuations in Price Level)—क्राउथर के अनुसार, परिमाण सिद्धांत इस बात की व्याख्या करने में असमर्थ है कि अल्पकाल में कीमत स्तर में उतार-चढ़ाव क्यों आते हैं।

6. कीमत स्तर को अनुचित महत्त्व (Undue Importance to Price Level)—क्राउथर का मत है कि यह सिद्धांत कीमत स्तर को अनुचित महत्त्व देता है जैसे किसी आर्थिक प्रणाली में कीमतों में परिवर्तन ही सर्वाधिक क्रान्ति तथा महत्त्वपूर्ण तत्त्व हों।

7. व्यापार चक्रों की व्याख्या में विफल (Failure to Explain Trade Cycle)—क्राउथर का यह कहना है कि मुद्रा के परिमाण को व्यापार चक्र में कीमत-स्तर के परिवर्तन का प्रमुख कारण बताकर यह सिद्धांत मुद्रा की मात्रा पर भ्रान्तिजनक बल देता है। हो सकता है कि मन्दी के दौरान मुद्रा की मात्रा में वृद्धि के बावजूद कीमतें न बढ़ें ; और तेजी के दौरान मुद्रा की मात्रा घटने पर भी कीमतें न गिरें। फिर, मंदी के दौरान नीची कीमतों का कारण मुद्रा की मात्रा की कमी नहीं होती और समृद्धि के दौरान ऊंची कीमतों का कारण मुद्रा की प्रचुरता नहीं होती। इसी प्रकार क्राउथर के अनुसार, 'मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त अधिक से अधिक अल्पकाल में व्यापार चक्र के कारण का अपूर्ण मार्गदर्शक है।'

8. ब्याज दर की उपेक्षा (Neglects Interest Rate)—फिशर के मुद्रा के परिमाण सिद्धांत की

1. G. N. Halm, *Monetary Theory*, 2/ed, p. 22

Scanned with CamScanner

प्रमुख दुर्बलताओं में से एकयह है कि यह मुद्रा और कीमतों में कारण-प्रभाव कारकों के रूप में ब्याज की दर की भूमिका की उपेक्षा करता है। फिशर का विनिमय का समीकरण संतुलन स्थिति से सम्बन्ध रखता है जिसमें ब्याज की दर मुद्रा की मात्रा से स्वतंत्र रहती है।

9. अल्पावधि घटकों की उपेक्षा (Neglects Short Period Factors)—केन्ज़ के अनुसार, मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त इसलिए अवास्तविक है कि यह दीर्घकाल में M और P के सम्बन्ध का विश्लेषण करता है। इस प्रकार यह उन अल्पावधि घटकों की उपेक्षा करता है जो इस सम्बन्ध को प्रभावित करते हैं।

10. पूर्ण रोजगार मान्यता पर आधारित (Based on Full Employment Assumption)—केन्ज़ के अनुसार, फिशर का समीकरण पूर्ण रोजगार को एक विशिष्ट स्थिति ही मानता है। सामान्य स्थिति तो अल्प-रोजगार संतुलन की ही होती है।

11. मुद्रा और कीमतों के बीच सीधा संबंध नहीं (No Direct Relation between Money and Price)—केन्ज यह नहीं मानता कि मुद्रा की मात्रा और कीमत-स्तर के बीच प्रत्यक्ष तथा समानुपाती सम्बन्ध होता है। बल्कि यह तो ब्याज की दर तथा उत्पादन के स्तर के माध्यम में अप्रत्यक्ष संबंध होता है। केन्ज़ के अनुसार, "जब तक बेरोजगारी रहेगी, तब तक उत्पादन और रोजगार उसी अनुपात में परिवर्तित होंगे जिसमें मुद्रा की मात्रा बदलेगी।" इस प्रकार केन्ज ने उत्पादन के सिद्धांत को मूल्य सिद्धांत के साथ समन्वित कर दिया और फिशर की इस बात के लिए आलोचना की कि उसने अर्थशास्त्र को "ऐसे दो कमरों में विभक्त कर दिया जिसमें मूल्य के सिद्धान्त और मुद्रा एवं कीमतों के सिद्धान्त में कोई खिड़कियां और दरवाजे नहीं हैं।"

12. V स्थिर नहीं (V not Constant)—फिर, केन्ज ने लक्ष्य किया है कि जब अल्प-रोजगार संतुलन होता है तो मुद्रा का चलन वेग (V) बहुत ही अस्थिर होता है जो मुद्रा के स्टॉक अथवा मुद्रा आय में परिवर्तन के साथ बदल जाता है। इसलिए फिशर की यह मान्यता अयथार्थिक है कि V स्थिर है और M स्वतन्त्र है।

13. मुद्रा के संचय कार्य की उपेक्षा (Neglects Store of Value Function of Money)—मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त की एक और कमजोरी यह है कि यह मुद्रा की पूर्ति पर ध्यान केन्द्रित करता है और मुद्रा की मांग को स्थिर मानकर चलता है। दूसरे शब्दों में यह मुद्रा के संचय मूल्य कार्य की उपेक्षा करता है और केवल मुद्रा के विनिमय माध्यम फलन पर ध्यान देता है। इस प्रकार यह सिद्धान्त एक-तरफा है।

14. वास्तविक शेष प्रभाव की उपेक्षा (Neglects Real Balance Effect)—डान पेटिनकिन[1] ने फिशर की इसलिए आलोचना की है कि वह वास्तविक शेष प्रभाव का अर्थात नकदी शेषों का वास्तविक मूल्य का प्रयोग करने में असफल रहा है। कीमत-स्तर गिरने से नकदी शेषों का वास्तविक मूल्य बढ़ जाता है जिससे व्यय बढ़ता है और परिणामत: अर्थव्यवस्था में आय, उत्पादन और रोजगार में वृद्धि होती है। पेटिनकिन का कहना है कि फिशर ने मुद्रा की मात्रा को आवश्यकता से अधिक अनुचित महत्त्व दिया है और वास्तविक मुद्रा शेषों के कार्य की उपेक्षा की है।

15. स्थैतिक (Static)—फिशर का सिद्धांत स्थैतिक है, क्योंकि इसकी मान्यताएं अवास्तविक हैं, जैसे दीर्घकाल, पूर्ण रोजगार आदि। इसलिए यह एक आधुनिक गत्यात्मक अर्थव्यवस्था पर लागू नहीं होता।

---

1. Don Patinkin, *Money, Interest and Prices*, 2/e, 1965.

Scanned with CamScanner